

### बुद्ध का आर्य सत्य और उसका महत्त्व

बुद्ध दर्शन में चार आर्य सत्य (चत्वारि आर्यसत्यानि) जीवन की वास्तविकताओं को समझानेवाले महत्त्वपूर्ण सिद्धांत हैं। ये सत्य हैं :

1. **दुःख** : जीवन में दुःख और असंतोष अवश्यभावी हैं। जन्म, बुढ़ापा, बीमारी और मृत्यु सभी दुःख के कारण हैं।
2. **दुःख समुच्चय** : दुःख का कारण तृष्णा (इच्छा) है। यह तृष्णा हमें संसार के भोगों और संसाधनों की ओर आकर्षित करती है, जिससे दुःख उत्पन्न होता है।
3. **दुःख निरोध** : दुःख का अंत संभव है। तृष्णा का त्याग करने से दुःख समाप्त हो सकता है।
4. **दुःख निरोध मार्ग** : दुःख के अंत के लिए अष्टांगिक मार्ग का अनुसरण करना आवश्यक है। यह मार्ग सही दृष्टि, सही संकल्प, सही वाणी, सही कर्म, सही आजीविका, सही प्रयास, सही स्मृति और सही समाधि पर आधारित है।

इन चार आर्य सत्यों का महत्त्व इस बात में है कि ये जीवन के दुखों के कारण और उनके समाधान के बारे में स्पष्ट और व्यावहारिक मार्गदर्शन प्रदान करते हैं।

### बुद्ध का निर्वाण

निर्वाण का अर्थ है सभी इच्छाओं, तृष्णाओं और अज्ञान का अंत, जिससे दुःख और पुनर्जन्म के चक्र से मुक्ति मिलती है। बुद्ध दर्शन के अनुसार, निर्वाण अष्टांगिक मार्ग का पालन करके प्राप्त किया जा सकता है। अष्टांगिक मार्ग का अनुसरण करने से व्यक्ति तृष्णा और अज्ञान को समाप्त करता है और आंतरिक शांति, ज्ञान और संतोष प्राप्त करता है। निर्वाण प्राप्त करने के लिए ध्यान, नैतिकता और प्रज्ञा का अभ्यास आवश्यक है।

**डॉ. श्रवण कुमार मोदी**

सहायक प्राध्यापक, दर्शनशास्त्र विभाग

शिवदेनी राम अयोध्या प्रसाद महाविद्यालय

बारा चकिया, पूर्वी चम्पारण

मो0-9608685335

Email Id- shrawankumarmodi1973@gmail.com